आपातकाल में सृजन फुलवारी

लीना मित्तल खेरिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

लीना मित्तल खेरिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-181-7

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, लीना मित्तल खेरिया
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY LEENA MITTAL KHERIYA:

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	जाने क्या किया है मैंने	6
2.	ये तन्हा उदास रात	7
3.	मानवता का चीर हरण	8
4.	ज़िंदगी की सीख	9
5.	भावनाओं का अंधकुँभ	10
6.	मन मस्त मलंग	11
7.	वो सितारा हसीन लगता था	12
8.	हमसे जाया न गया	13
9.	कब आओगे...?	14
10.	आत्म मंथन	15
11.	यूँ ही कभी	16
12.	गज़ल	17
13.	यादों के झरोखों से	18
14.	रोशनी की इक किरण	19
15.	अनंत पथ	20
16.	क्या ढूँढ रही हूँ...मैं	21

जाने क्या किया है मैंने

कुछ बसंत अपने ऑंचल में
देखो न छुपा लिया है मैनें
अल्हड़ सा थोड़ा बचपन सीने में
रख कर बचा लिया है मैंने

बोझिल बादलों का एक टुकड़ा
आस्मॉ से चुरा लिया है मैंने
झिलमिलाते हुये कुछ सितारों को
पलको पर सजा लिया है मैनें

खुद से ही कुछ रूठे हुए से
अपने मन को मना लिया है मैंने
ख्वाबों सा हसीं रेत का घरौंदा
दिल की ज़मीं पर बना लिया है मैंने

ऑखों की देहरी पर दस्तक देते
भीगे से दर्द को भुला दिया है मैंने
झरनों सी खनकती हसीं को
अपने होंठों पर बुला लिया है मैंने

नन्हे जुगनू सी उम्मीद की लौ को
स्याह रातों में जला लिया है मैंने
इस भीड़ में खोये हुए खुद को
खुद से फिर से मिला दिया है मैंने

ख्वाबों के दरीचे में संग में चाय पीने
ज़िंदगी को बैठा लिया है मैंने
कामयाबी की सौंधी सी खुशबू को
साँसों में बसा लिया है मैंने..

ये तन्हा उदास रात

ये स्याह सी नितांत एकाकी सी
ये बेहद तन्हा उदास सी है रात
आज सन्नाटों को देखो चीरकर
ख़ामोशियाँ भी कर रही है बात

इन रेशमी परदों की छुअन मुझे
तेरे लम्स की याद दिलाती है
शफ्फाक नर्म चॉदनी आकर
मेरी रूह में उतरती जाती है

मेरी तरह ही तो सभी दरों दीवार
ये कितने वीरान बुझे बुझे से हैं
तेरी याद भी ठिठक कर थम गई
उसके पॉव भी रुके रूके से हैं

आँखों में मेरी आज नींद नहीं
पसरा है अनंत तेरा इंतज़ार
मेरे वजूद का हर इक कतरा
तेरे मिलन को है कबसे बेकरार

मेरे बिस्तर पर आज मैं नही
सोई है अकेले मेरी परछाई
हाय काश कि तुम आकर मुझे
बॉह पाश में भर लेते हरजाई

मानवता का चीर हरण

धमनियों में लोहा उबल रहा
मेरी आँखों में धधकते हैं शोले
आवेश को नियंत्रित करके मैं
खून की घूँट पी रही होले होले

किसी को मर्यादाओं का बोध नहीं
क्यूँ इंसानियत हो रही है भस्म
हर गली मोहल्ले के नुक्कड़ पर
भाजी की तरह बिक रहे हैं जिस्म

मासूम अबोध नन्ही कलियों को
खिलने से पहले तोड़ लेते हैं लोग
जब तक जी चाहा कुचला मसला
जब जी चाहा तब छोड देते हैं लोग

मजबूरियों की ज़ंजीर में जकड़े
मॉ बाप सौदा कर रहे बेटियों का
हाय कैसी है ये विडंबना कि वो
ऐसे बन्दोबस्त कर रहे रोटियों का

नारी की अस्मत से खिलवाड़
कहीं शौक तो कहीं धंधा हो गया
हवस और पैसे की प्यास में
क्यूँ मनुष्य इस कदर अंधा हो गया

सरेआम मानवता का चीर हरण
आखिर कब तक झेला जायेगा
असहय द्रौपदी की लाज बचाने
कब कोई कृष्ण अवतारी आयेगा

ज़िंदगी की सीख

खूबसूरत नज़र ही नहीं नज़रिया भी रखना चाहिए
ज़िंदगी के सफर में हसीं हमसफ़र रखना चाहिए..

ख्वाईशों के तुम पंख लगाकर चाहे छू लो आसमान
मगर सबको अपने पॉव हमेशा ज़मीं पर रखना चाहिए..

माना कि बहुत उलझी है ये गणित रिश्ते नातों की
लेन देन के खाते का हिसाब बराबर रखना चाहिए...

पिघले जो न किसी के दर्द में किस काम का वो दिल
दुआओं में अपनी थोड़ा तो असर रखना चाहिए

मुमकिन नहीं होती रहे मुलाक़ात सबसे हरदम
अपनों की मगर हमेशा ख़ैर खबर रखना चाहिए..

पूरी ईमानदारी से निभाता रहे फ़र्ज़ हर कोई
उसे पूरा करने में नहीं कोई कोर कसर रखना चाहिए ..

घूमो सारी दुनिया चाहे तुम कर लो जितनी फकीरी
सुकून की जहां रोटी मिले ऐसा घर रखना चाहिए..

नेकी कर दरिया में डाल ये कहते हैं सारे लोग
बदी करते वक्त ऊपर वाले का डर रखना चाहिए ..

भावनाओं का अंधकुँभ

ऊँचे
नक्काशीदार महलों में
टाट के पैबंद सा था
मेरा प्यार... तुम्हारे लिए
बड़ा ही असहज
बहुत ही अस्वाभाविक
जो किसी को कभी भी मान्य नहीं लगा
शायद तुमको भी नहीं ..

आज
यूँ नितांत अकेली बैठी
ये सोचतीं हूँ मैं
क्या थी उसकी वास्तविकता
आखिरकार
उस सम्मोहन का यथार्थ क्या था
जो ह्रदय को चीरकर
कुछ इस तरह विभाजित कर गया
कि आज तक ढूँढ रही हूँ मैं उन बिखरे हुए टुकड़ों को..

अत्यंत
भयावह होता है भावनाओं का
गहरा सा ये अंधकुँभ
कि जिसमें अनायास ही यदि कोई एक बार पड़ गया
फिर चाहे जितना जी चाहे
माथा फोड़े या हाथ पैर मारे
किंतु होता है उसमें से निकास लगभग निषेध ...

मन मस्त मलंग

मौन धड़कन गा रही है
आज राग तेरे प्यार का
खटखटा रहे हो तुम भी
पट इस दिल के द्वार का

मस्त मलंग सा मनवा मेरा
झूम रहा बिन बदरिया
तुम ही हो मनमीत मेरे
हो तुम ही साँवरिया

सुध बुध सब बिसरा बैठी
तेरे नाम की ऐसी लागी लगन
सोते में भी जागती हूँ मैं
रतजगे करते हैं मेरे नयन

तेरे कॉंधे पर सर रखा तो
मुझको सहारा मिल गया
भँवर में डूबती नैया को मेरी
मानो किनारा मिल गया

तेरे हाथ की छुअन ने मानो
मुझको कुंदन कर डाला
घूँट घूँट कर पी रही मैं तो
प्रेम रस का ये अमृत प्याला

वो सितारा हसीन लगता था

मेरी ख़्वाहिशों की तरह टूटकर
बिखर गया सितारा कोई
दिल के आसमान से कर गया
बेसबब क्यूँ किनारा कोई

काली घनघोर अँधेरी रातों में
कभी जुगनू सा चमकता था कोई
मोहब्बतें उन्स दामन में समेटे
आफताब सा दमकता था कोई

जाने कब क्या हुआ कैसे हुआ
कभी तो आकर मुझसे बता दे कोई
अपने साथ सारी रौशनाई लेकर
मेरी बज़्म से हो गया रूखसत कोई

लहू संग घुलकर बहता है नसों में
धड़कन बन धड़कता है कोई
आज भी हर घड़ी मेरी आँखोें में
रहता है बन कर शरारा कोई

खुदा मेहर करे फना हो कर भी
मैं किसी के काम आ जाऊँ कोई
काश कि टूटते सितारे की मानिंद
किसी मन्नत का बनूँ सबब कोई

हमसे जाया न गया

हसरतें इस दिल में इतनी हैं कि उनका
बोझ अब हम से उठाया न गया...
तुम तो छोड़ कर चल दिये ज़ालिम
पर तुम्हें छोड़ कर हम से जाया न गया...

तरसता रहा ये दिल मेरा, दिल की आवाज़ सुनने को
एक बार भी तुम से मगर मुझको बुलाया न गया....

है प्यार बेइन्तिहा हमें मालूम तो है तुमको
चाहते तो थे छुपाना पर हमसे छुपाया न गया ....

शामिल थे शामिल रहे ज़िंदगी में मेरी तुम पर
दिल की दहलीज़ तक तुमसे कभी आया न गया...

तुम भूल गये क़समें, तुम भूल गये वादे
पर हमसे तो अब तलक वो सब भुलाया न गया ...

मुश्किल है मेरा जीना, एक पल भी तेरे बिन
तुमको मगर ये राज़ हम से बताया न गया ...

आँखों ने बयां कर दी बातें सब इस दिल की
होंठों से तो हमसे कभी ये सब जताया न गया ....

तुम तो छोड़ कर चल दिये ज़ालिम
पर तुम्हें छोड़ कर हमसे ही जाया न गया...

कब आओगे...?

रस्ता देख रही मेरी अँखियाँ
तुम ना जाने कब आओगे
जाने कब आकर मेरी इन
अँखियाँ की प्यास बुझाओगे

कजरा गजरा कँगना अँगना
सब तेरी राह निहारे है
बहती हवायें भी तो उड़ उड़
देख तेरी बाँट बुहारे है

घर का क्या दिल का भी मैनें
खिड़की दरवाज़ा खोल दिया
आने वालें हैं अब मेरे प्रीतम
हर आने जाने वाले को बोल दिया

मेरे साड़ी के पल्लू में मैंने
तेरे नाम की गॉठ लगाई है
मेरे लिए तो बस एक तू ही
बाक़ी दुनिया सब पराई है

दूर सही पर फिर भी तुम
हर पल मुझ में ही समाये हो
रह रह कर चौंक जाती हूँ मैं
मुझे लगता है कि तुम आये हो
आये हो ना...!

आत्म मंथन

बास कपास सा जले मन मेरा
धूँ धूँ कर सुलगे सब एहसास
बुझकर भी जो बुझ ना सकी
कैसी तृष्णा ये कैसी है प्यास

है अंतर्मन में असह्य वेदना
मानो कर रहा हो चीतकार
कोलाहल तू कुछ तो थम जा
क्यूँ करता है इतना हाहाकार

ना अपने हिस्से की धरती मिली
ना ही मिला आसमान प्रयाप्त
उड़ने को जब भी पंख पसारे
उड़ान को कर दिया गया समाप्त

प्रतिक्षा बहुत कर ली है हमनें
अब करना होगा हमें खुद प्रयास
नव चेतना को संचारित करके
जाग्रत करना होगा पूर्ण विश्वास

स्वर्णिम रश्मियों से उर्जा लेकर
हमें करना होगा दूर अंधकार
पर्वत ऋँखलाओं से दृड़ता लेकर
व्यक्तित्व का करना होगा विस्तार

यूँ ही कभी

कभी-कभी
ये सोचती हूँ मैं कि
उन्मुक्त परिंदो की तरह
उड़ते उड़ते जा बैठूं
किसी पेड़ पर पत्तियों के झुरमुट में
इस रोज़मर्रा की
भागती दौड़ती सी जिंदगी से
दूर बहुत दूर
और जी भर कर जी लूँ..

कभी-कभी
ये मन करता है कि
थोड़ा थम जाऊँ
कुछ सांस तो ले लूँ
थक गयी हूँ सबके साथ रहते रहते
कभी तो घड़ी दो घड़ी ही सही
खुद के साथ भी रह लूँ..

कभी-कभी
ये लगता है कि
करती रही सदा ही
संवाद सबसे पर
खुद से भी तो
कहना था कितना कुछ
तो क्यूँ ना यूँ ही कभी एकाकी में
वो सब कुछ आज खुद से भी कह लूँ..
बस....यूँ ही कभी ...

गज़ल

इन वीरानों में कब से भटक रहे हैं हम
लगता है सदियों से तुझे ढूँढ रहे हैं हम

किसी ने कहीं देखा हैं मेरा दिलबर
हर इक से जाने क्यूँ पूँछ रहें हैं हम

इस भीगे हुये से सर्द मौसम में जर्द
ज़ाफरानी की मानिंद हो रहे हैं हम

दर्द का सैलाब है या है कोई बवंड़र
बेखुदी में खुद ही को डुबो रहे हैं हम

टूट कर बरसी है आज फिर बदरी
तेरी यादों से दामन भिगो रहे हैं हम

तेरी तलाश में निकल पड़े जब से
रफ्ता रफ्ता खुद को खो रहे हैं हम

ऑंखों से आँसू बन कतरा कतरा
खुद ही पिघल कर बह रहे हैं हम

शाख से झरते हर गुलों गुंचा से
अपना हाले दिल कह रहे हैं हम

वो चुभ रहे हैं शूल बनकर 'लीना'
नश्तर ये बेरूखी के सह रहे हैं हम

यादों के झरोखों से

होठों पर मेरे इक चुप सी है
मेरी पायल भी है खामोश
तुम जब से गये हो छोड़कर
फिर मुझको कहॉ कोई होश...

पानी में उठती तरंगों सा
मेरा दिल भी हिलोरे खाता है
यूँ तन्हाई में तन्हा बैठकर
तुझे सोचना मुझे क्यूँ भाता है..

तुम यादों के झरोखों से झॉक रहे
तमाम ख्वाईशें रहीं हैं मचल
अब ये अग्न मिटाये से ना मिटे
इस आँच में रही मैं पिघल ..

इक टीस सी दिल में उठती है
तेरी हूँक मुझे तड़पाती है
सतरंगी सपनों की ये झालर
हर पल बेकल किये जाती है..

आ जाओ बस इक बार दिलबर
इन उलझी लटों को सवाँर दो
सदियों से प्यासी मेरी रूह को
तुम प्यार ..और बस ..प्यार दो..

रोशनी की इक किरण

घनघोर अँधेरों को चीरकर
रोशनी की इक किरण झाँक रही है
उम्मीद की लौ जलाये
वो जिंदगी की ओर ताक रही है

उजाले तो हो ही जायेगें
तू अखंड़ अटल विश्वास रख
तिमिर के बादल भी छट जायेगें
तू हिम्मत को अपनी अटूट रख

टकटकी लगाये बैठा है सवेरा
अब भोर बस आ ही रही है
अंधकार सारा दामन में समेटे
अब रात देखो जा ही रही है

खटखटा रही हैं अब खुशियॉ
दिल के द्वार की कुंड़ी खोल दे
इस स्याह सी नितांत खोमोशी में
तू चुप न रह कुछ बोल दे

छट रही है अब सँध्या घनेरी
नव आभा प्रस्फूटित हो रही है
स्वर्णिम सी मुखरित हो रोशनी
आशा के मुखमंडल पर डोल रही है

अनंत पथ

दैनिक दिनचर्या में अक्सर
हम कुछ इस कदर लिप्त हो जाते है
कि हम ये भूल ही जाते है कि
ये दुनिया तो रैन बसेरा है
हम सबका यहाँ पर बहुत सूक्षम ही तो डेरा है
मोह माया के जटिल जाल ने मगर
देखो चहूँ ओर से कैसे अपने मोहपाश में हम सबको घेरा है..

हम ये भी तो भूल जाते है कि
ये जीवन तो एक मेला है
सब साथ तो है फिर भी इस भीड़ में हर कोई अकेला है
सब ही तो यहाँ क्षणभंगुर है
चाहे हो दारूण दुख या फिर सुख की सुनहरी बेला है

जीवन की आपाधापी में हमें
ये भी स्मरण नही रहता कि
इस मिथ्या जगत को हम सबको
छोड़ कर एक न एक दिन
अनंत पथ पर अग्रसर होना है

हे मानव ...तनिक विचार तो कर
कि इस नश्वर संसार में
जब सबको सब कुछ छोड़ कर
एक न एक दिन जाना ही है
तो फिर क्यूँ संचय करना
इतना सब कुछ यदि संचय करना ही है
तो संचय करोपुण्य कर्म.. परोपकार . परस्पर स्नेह
क्योकिं यही तो है जो जायेगा
उस अंतिम यात्रा पर सबके साथ..!

क्या ढूँढ रही हूँ...मैं

मैं.....खुद ही खुद में अपना वजूद ढूँढ रही हूँ
अपने खुद के होने का मैं, आजकल सबूत ढूँढ रही हूँ

ढूँढ रही हूँ मैं वो कुछ भूले बिसरे हुये पल
जो ना जाने क्यूँ मिलकर भी नही मिलते हैं आजकल

जो रख कर कहीं भूल गयी, वो एहसास ढूँढ रही हूँ
अपनों की लम्बीं फेरहिस्त में, मैं कोई खास ढूँढ रही हूँ

ढूँढ रही हूँ मैं कितने ही ज्वलंत प्रश्नों के उत्तर
जिनका जवाब ढूँढने का कभी मिला ही नही था अवसर

जो मुझमें ही कहीं छुपा बैठा है मैं वो हौसला ढूँढ रहीं हूँ
जो स्थापित कर दे हर सत्य को, वो कठोर फैसला ढूँढ रही हूँ

ढूँढ रही हूँ मैं मासूमों के चेहरे पर मासूम मुस्कान
पर इस खोई हुई हँसी को पाना, अब लगता नही आसान

बारिश में गिरती बूँदों से उठती, सौंधी खुशबू ढूँढ रही हूँ
पत्तों की शाखों से गुपचुप, गुफ्तगू ढूँढ रही हूँ

ढूँढ रही हूँ मैं रोज़मर्रा की छोटी चीज़ों में सुकून
सर्वे भवन्तु सुखिन: का काश हर दिल में हो ज़ुनून

भागती हुई सी ज़िंदगी में मैं, कुछ ठहराव ढूँढ रही हूँ
संकीर्ण सोच के ठहरे पानी में निर्झरी सा बहाब ढूँढ रहीं हूँ

ढूँढ रही हूँ मैं वो रहस्मयी चंचल सी चितवन
जो उजालों का नया आगाज़ करे, जैसे हो भोर की पहली किरण

इस बेस्वाद जी जिंदगी में, मैं कुछ ज़ायका ढूँढ रही हूँ
फिर वही माँ का आँचल वही, बचपन वाला मायका ढूँढ रही हूँ!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

लीना मित्तल खेरिया

सी-४०४, प्रतिष्ठा अपार्टमेंट
निरमा स्कूल के पीछे,
ग्रेंड भगवती लेन, बोदकदेव
अहमदाबाद-३८००५४

Email- leenakheria1972@gmail.com
Mobile - 9925029155

हम सभी जानते हैं कि आज हम वैश्विक त्रासदी से गुजर रहे हैं। इस आपातकाल में हमें संयम संकल्प व सावधानी से काम लेना होगा तभी हम इस जंग को जीत पायेंगे।

कलमकार होने के नाते ये हम सभी का दायित्व है कि साहित्य के माध्यम से सभी को सोहार्द बनाने हेतु प्रेरित करें।

सभी जानते हैं कि शब्दों में एक अद्‌भुत चमत्कारी शक्ति होती है जो हर दिल पर दस्तक देती है..

कहते है ना कि जो काम तलवार नही कर पाती वो काम सही सटीक शब्द कर जाते हैं..

अंतरा शब्दशक्ति अपने नाम को चरितार्थ करती हुई इसका अद्वतिय उदाहरण है... ये सदा ही सामयिक विषयों को बखूबी पटल पर श्रोताओं के सम्मुख रखते हुए नव चेतना की अलख जगाती है।

साहित्य के माध्यम से समाज को नई दिशा व नवीन ऊर्जा से लाभान्वित करने के लिए मैं अंतरा की संपादक श्री प्रीति सुराना जी को स्नेह वंदन करती हूँ..!

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-181-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/